ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 207-210

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

काशीवासी प्रवासी विधवाएं सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

मंजीत सिंह

शोध अधयेता– समाजशास्त्र विभाग, टी0डी0 कालेज, जौनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 29.06.2020, Revised- 04.07.2020, Accepted - 10.07.2020 E-mail: manjeetsinghbhu2016@gmail.com

सारांश : *सप्तपुरियों में धर्म तथा विद्या की प्राचीन नगरी काशी न केवल संन्यासियों और पण्डितों को आकृष्ट करती है बल्कि हिन्दू विधवाओं तथा वृद्ध नर–नारियों की शरणस्थली भी है। पौराणिक विश्वास के अनुसार काशी में मरने पर मुक्तिलाभ होता है। यही लोकविश्वास भी है। पाप–भावना से दबी, समाज द्वारा लांछित और जीवन के समस्त आनन्दों से वंचित हिन्दू विधवा के घोर अन्धकार में काशी प्रकाश की सबल रेखा है। भारत के कोने–कोने से यहॉ विधवाएँ मृत्युपर्यन्त काशीवास की कामना से पहुँचती है। मुक्तिकामियों का काशी के प्रति यह आकर्षण कब से है और किन परिस्थितियो में इस परम्परा का जन्म और वर्धन हुआ यह सब आवृत इतिहास का रहस्य है। इस समय हम इतना ही कह सकते हैं कि दूर प्रदेशों से मुक्तिकामियों को और विशेषकर विधवाओं को काशीवास के लिए आकृष्ट करने की यह परम्परा बहुत प्रचीन नहीं है। पुराने ग्रन्थों और प्राचीन साहित्य में इसका उल्लेख नही है। यंत्र चालित द्रुत वाहनों के पहले महिलाओं के लिए ही नही बल्कि पुरूषों के लिए भी यात्रा, विशेषकर लम्बी यात्रा, अत्यन्त जोखिम का काम था। अतः दूरस्थ प्रदेशों से युवती अथवा पौढ़ महिलाओं की सकुशल यात्रा की बात सोचना कठिन है। आपदाग्रस्त, दुःखी प्राणियो को तीर्थस्थलों में कदाचित सदा ही शरण मिलती रही होगी। वहॉ सहज ही तीर्थयात्रियों की दानवृत्ति उनकी उदरपूर्ति का साधन बनती होगी। पर उस युग में दूरस्थ तीर्थ की यात्रा महिलाओं के लिए सम्भव नहीं थी। सन् 1825 तक के काशी का वर्णन करने वाले डॉ0 मोतीचन्द्र के 'काशी का इतिहास' में भी प्रवासी विधवाओं की उपस्थिति का उल्लेख नहीं है।*

कुंजीभूत शब्द– सप्तपुरियों, मुक्तिकामियों, परिस्थितियो, मृत्युपर्यन्त काशीवास, लोकविश्वास,तीर्थयात्रियों, वर्णन ।

काल के किसी बिन्दु इनकी संख्या कितनी थी, ये कहॉ और कैसे रहती थीं, उदरपूर्ति और भरण–पोषण कहॉ से होता था, धार्मिक और सामाजिक जीवन कैसा था कैसा आचार व्यवहार था, इसका कुछ धूमिल आभास, अतिरंजित और कल्पना प्रसूत उक्तियों तथा देवकथाओं से मिलता हैं जो हमारे काम के लिए विश्वसनीय नहीं है। तो वर्तमान स्थिति के आधार पर पूर्व की स्थिति का कुछ अनुमान किया जा सकता है। दूसरे, लोक में प्रचलित कथाएँ अतिरंजित भले ही हों निराधार नही होतीं। बल्कि कभी–कभी वास्तविकता से उनका गहरा सम्बन्ध होता है। लोक विश्वास तो विध वाओं को कामियों के भोग के साधन के रूप में देखता आया हैं। शायद अनेक वेश्या का जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो जाती हों। कुछ रखैल के रूप में भी रहती होंगी और कुछ पुनः विवाह भी कर लेती होंगी। पर इस अध्ययन में अन्वेषण का विषय यह नहीं है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि विभिन्न प्रदेशों से काशीवास के लिए आयी विधवाओं का सामाजिक और धार्मिक जीवन कैसा है और उनकी गुजर–बसर कैसे होती है, अर्थात उनके लौकिक जीवन की क्या समस्याएँ हैं। काशीवास के लिए घर छोड़ने के पीछे क्या प्रेरणा है और आने के बाद प्रेरणा का क्या रूप है। और सबसे मुख्य बात यह है कि काशी उनके जीवन को कैसा रंग देती है, और काशी के स्वरूप में उनका क्या अंश है।

काशी में भारत के प्रायः हर क्षेत्र के लोग निवास करते हैं। प्रायः इन लोगो की अलग–अलग बस्तियॉ हैं। जहॉ भाषा, वेशभूषा और मंदिरो की बनावट आदि से इन्हे पहचाना जा सकता है। इन्ही मुहल्लो में सैकड़ो की संख्या में प्रवासी काशीवासी विधवाए रहती हैं। गंगा स्नान, देवदर्शन और कथा–कीर्तन के लिए जाते–आते अनायास दिखाई देती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र काशीवासी विधवाओं के सामाजिक और आर्थिक जीवन को देखने और समझने की दिशा में एक कदम हैं।

क्षेत्रीय विभाजन– काशीवासी विधवाएँ गंगा–तट के पश्चिम में उत्तर से दक्षिण तक प्रायः 5 किलोमीटर में फैले हुये पक्के महाल में रहना पसंद करती हैं। हनुमानघाट में तमिल, तेलगू और कर्नाटक की विधवाएँ, बंगाली टोले में बंगाली विधवाएँ, भदैनी में भोजपुरी विधवाएँ, टेढीनीम तथा नीलकंठ में मैथिल विधवाएँ, सरस्वती फाटक के आस–पास मारवाड़ी विधवाएँ, दुर्गाघाट पर महाराष्ट्रीय विधवाएँ और मंगलागौरी मुहल्ले में विशेषकर नेपाली विधवाओं का वास

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

है। गंगा–स्नान और देवदर्शन विधवाओं के नित्यकर्म हैं। यह सुविधा पक्के महाल में रहने से सहज मिलती है। पौराणिक विश्वास के अनुसार काशी का यह प्रवित्रतम क्षेत्र हैं। गंगा के अतिरिक्त दक्षिण से उत्तर तक फैले हुए विस्तृत घाट, काशी विश्वनाथ, केदारेश्वर और प्राचीन ओंकारेश्वर के मंदिर इसी क्षेत्र में हैं। इनके अतरिक्त 12 भैरवों और 12 विनायकों के मंदिर भी इस क्षेत्र में ही हैं। इसी क्षेत्र में संन्यासियो के अधिकांश आखाड़े तथा मठ, संस्कृत पाठशालाएँ और वैष्णवों के मुख्य मंदिर हैं।

कुछ प्रश्न कुछ सुझाव आगमन क्यो ?– एक प्रश्न यह है कि अबला नारी परदेश जाने और रहने का खतरा उठाती है तो उसका कोई विशेष कारण होना चाहिये। विधवाओं की एक बहुत छोटी संख्या ही मुक्ति की कामना से काशीवास के लिए चलती है। पुनः बंगाल, नेपाल और मिथिला से ही अधिक क्यों आती हैं? इसके लिए वहॉ के रीती–रिवाजो, विधवाओं पर लगे सामाजिक बंधनों एवं भांति–भांति के निषेधों को देखना ही होगा। अध्ययन गत महिलाओं में से अनेक ने पारिवारिक झगड़ो ओर परिवार के अभाव के कारण, कई ने घरेलू हिंसा से पैदा हुई विपत्ति के कारण घर छोड़ने की बात कही है। 225 विधवाओं में से 32 ने पारिवारिक सदस्यों के कारण, 3 ने समाज ने समाज एवं पड़ोसियो के कारण और 131 ने स्वंय शुद्व काशीवास की इच्छा से घर छोड़ने की बात कही हैं। और 59 विधवा महिलाओं ने अन्य कारणों से अतः विपत्ति में आश्रय मुख्य समस्या है। इस दृष्टि से काशी एक आर्दश शरण स्थली हैं। यह विधवाओं का वस्तुतः मुक्तिक्षेत्र हैं। काशी के अनुभव की केवल 8 ने शिकायत की हैं, 53 ने कहा कि यहॉ के लोग बहुत अच्छे हैं और अन्य लोगों ने कोई शिकायत नही की। इस तीर्थ में विधवा को गर्हित और अपशकुनी नहीं माना जाता। मंदिरों में कथा–कीर्तन तथा सत्संग की सभाओ में उन्हें सधवाओं का–सा सम्मान मिलता है। जो क्षमता रखती हैं वे धार्मिक आयोजनों का संचालन और नेतृत्व करती हैं। एक दूसरे की मदद करती हैं। अतः काशी में पहुॅचकर हिन्दू विधवा घुटन और अपमानजनक वातावरण से मुक्ति पा जाती हैं। हिन्दू विधवा के मन में यह भावना घर कर लेती हैं की वैधव्य उसके गर्हित पाप का फल हैं। काशी उसे अगले जीवन के लिए गारन्टी देती है। काशी–मरण उसे सब पापों से मुक्त कर देगा। काशीवासी विधवाओं के मन में यह आस्था बद्वमूल है और इस आशा को संजोये हुये वे नितान्त अभाव और असुविधा पूर्ण जीवन साहस के साथ जीती हैं। काशी छोड़ने का नाम नही लेतीं। और जैसे–जैसे आयु पूर्ण होती जाती है। काशी के प्रति उसका लगाव घनीभूत होता जाता है। इस पूरे अध्ययन में बहुत कम ऐसी विधवाएं मिली जिनका हौसला पस्त हो। आर्थिक समस्याओं पर प्रश्न पूछने पर 213 ने बताया की उन्हें बहुत सी आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जब कि 12 विधवाऍ ऐसी मिली जिन्हे कोई आर्थिक समस्या नही है।

विधवा पेंशन से लाभार्थियों की संख्या भी ज्ञात करने की कोशिश की गयी साक्षात्कार से ज्ञात हुआ की 225 में से सिर्फ 37 विधवा महिलाओं को विधवा पेंशन का लाभ मिलता हैं शेष 188 विधवा महिलाओं को विधवा पेंशन नही मिलती है।

आवेगात्मक मानसिक समसयाओं बारे में जब प्रश्न किया गया तो अधिकाशं ने कहा कि हम आवेगात्मक समस्याओं के बारे में जब प्रश्न किया गया तो अधिकांश ने कहा कि हम आवेगात्मक समस्याओं से पीड़ित नही हैं। 225 में से 36 महिलाऍ कभी अप्रसन्न नही महसूस करती है। 139 विधवा महिलाऍ कभी–कभी अप्रसन्न महसूस करती हैं।

अनिद्रा से सम्बंन्धित प्रश्न पूछने पर 20 महिलाओं ने कहा उन्हे अच्छी नींद आती हैं। 127 को कभी–कभी अनिद्रा महसूस होती है और 78 विधवा महिलायॅ अधिकतर अनिद्रा महसूस करती हैं। इनमें12.4 प्रतिशत विधवा महिलायॅ 36–45 आयु वर्ग के बीच की हैं 12 प्रतिशत 46–55 आयु वर्ग के बीच और सर्वाधिक 75.6 प्रतिशत विधवा महिलाओं की आयु 56 वर्ष या इससे अधिक है। इनमें 131 विधवा महिलायें 10 वर्ष या इससे अधिक वर्षो से काशीवास कर रही हैं।

ये विधवाएं काशी को भी कुछ देती हैं। यहॉ के धार्मिक वातावरण में कीर्तन–भजन मण्डलियो, गंगा–स्नान, मंदिरो में देवदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान हैं। विधवाऍ इन समागमों और उत्सवों में विशेष स्थान रखती हैं। काशी को सार्वदेशिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी बनाने में इनका भी योगदान हैं।

आर्थिक स्थिति, जीविका स्रोत– एक चौथाई काशीवासी विधवाऍ अत्यन्त दरिद्रता और अभाव का जीवन व्यतीत करती हैं। 25.7 प्रतिशत विधवा महिलाऍ अपनी आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए छोटा–मोटा काम करती हैं 2.6 प्रतिशत भीख मॉगती हैं तथा सार्वधिक 49.0 प्रतिशत विधवा महिलाओं की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति दान–धर्म से होती हैं तथा 21.8 प्रतिशत अन्य की श्रोतो से । करीब 4.9 प्रतिशत विधवा महिलाओं को उनकें परिवार वालो से कुछ या पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलती है। 16.4 प्रतिशत को कभी–कभी तथा सर्वाधिक 78.7 प्रतिशत विधवा महिलाओं को अपने परिवार से कभी भी सहायता नही मिलती हैं। सरकारी पेंशन 37 को मिलती हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

यज्ञोपवीत, दीपबत्ती आदि बनाकर भी कुछ विधवाऍ 500 से 1000 रू0 मासिक तक कमा लेती हैं। परन्तु विधवाओं का सबसे अधिक व्यापक सहारा घरेलू सेवा हैं। इसमें 56. 8 प्रतिशत महिलायें लगी हैं। किन्तु अत्यन्त वृद्व हो जाने पर और वृद्वावस्था की बीमारियों से अत्यधिक पीड़ित रहने पर असमर्थ हो जाती हैं। और अपनी नित्यक्रियाओं के लिए भी दूसरों पर आश्रित हो जाती हैं। ऐसी स्थिती बहुत ही दयनीय और कष्टकारी होती हैं। खेद है केवल मदर टरेसा का निर्मल हृदय दीन–हीन निवास ही एक ऐसी संस्था है जहॉ रोग तथा जरा से असमर्थ काशीवासी विधवाओं को शरण मिल सकती है।

यद्यपि सतुआबाबा आश्रम, आनन्दमयी मॉ आश्रम, मुमुक्ष भवन, श्यामा छात्रावास, अच्युत आश्रम जैसे दो–चार ऐसे स्थान हैं। जहॉ काशीवासी कुछ विधवाऍ रहती हैं। पर ऐसे संस्थाओं में कुल संख्या 75 से अधिक नही है। सबसे अधिक रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम की असमर्थशाला में हैं। असमर्थो की व्यवस्था– विशेषकर असमर्थ विधवाओं की अनिवार्य व्यवस्था होनी चाहिए और ऐसे आश्रम या आश्रमशालायें बनाये जाने की आश्यकता है जहॉ इन निराश्रित मानवियो की देख–भाल तथा रोगापचार की समुचित व्यवस्था हो। इसमें शासन, स्वैच्छिक सेवा संस्थाए और धार्मिक संगठन तथा धर्मार्थी दाता सब हाथ बॅटा सकते हैं। सरकारी पेंशन– समस्या का एक खेदजनक पहलू सरकारी पेंशन से सम्बन्ध रखता हैं। गत वर्ष (सन् 2019–20) में उत्तर प्रदेश सरकार ने विधवा महिलाओं की मदद के लिए अच्छी स्कीम शुरू की है। यह योजना गरीबी रेखा से नीचे गुजर–बसर कर रही 18 से 60 साल उम्र की निराश्रित विधवाओं के लिए हर महीने 300 रूपये की राशि दी जाती हैं। पर खेद है कि इस समस्या की ओर समाजसेवी संस्थाओ का ध्यान नहीं हैं कुछ असामाजिक तत्व विधवाओ और सरकार के इस विभाग के बीच की कड़ी का काम करते हैं। ये गरीब विधवाओं को ठगते हैं और काफी धन लेकर काम करते हैं नतीजा यह है कि जो सबसे दीन–हीन है और जो साधन जुटा सकती हैं वे इसका लाभ उठा रहीं हैं। तथा जिनकों मदद की वास्तविक जरूरत है वह विधवा पेंशन से वंचित हैं क्योकि आवेदन पत्र तैयार करने तथा जॉच सम्बन्धी अनेक जटिलताऍ जरूरतमंदो के रास्ते में बाधा बनकर खड़ी हैं हमारे न्यायदर्श की 16.4 प्रतिशत महिलाओं को यह पेशन मिलती है। इस मद में धनराशि सीमित है जिसें काशी की विशिष्ट आवश्यकता के अनुसार बढ़ाने की आवश्यकता है। **परिवर्तन–** इस अध्ययन से यह पता चला है कि काशीवास के लिए आने वाली विधवाओं की संख्या मे निरंतर कमी हो रही है। दूसरे, स्वतः काशीवासी विधवाओं के दृष्टिकोण में गहरा परिवर्तन हुआ है। दृष्टिकोण में परिवर्तन सम्बन्धी सूचना जिनसे ली गयी उनमें 169 विधवाओं ने पुनर्विवाह का समर्थन किया और 56 ने पुनर्विवाह के विरोध मे मत दिया। विधवाओं की प्रस्थिति सुधार हेतु 63 ने महिला शिक्षा तथा 33 ने सरकारी महकमों में नौकरी करने का समर्थन किया 15 ने सम्पत्ति में उत्तराधिकार तथा 60 ने समाज सुधार और 54 ने महिलाओं में जागरूकता को विधवाओं की प्रस्थिति सुधार हेतु आवश्यक बतलाया। विशेष रूप से बंगाल की उच्च तथा मध्यम वर्ग की जातियों में लड़कियों के विवाह की अवस्था 18 और 20 के स्थान पर 21–25 वर्ष हो गयी है। दूसरे, विधवाओं के प्रति कठोर दृष्टि बदल रही है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल में, नगरों में ही नही ग्रामीण क्षेत्रों में भी ब्राहामण तथा क्षत्रिय परिवारों में विधवा विवाह की अनेक घटनाऍ हुई है और उन्हें जातीय समाज का समर्थन भी मिला हैं। यह परिवर्तन बुनियादी हैं। महाराष्ट्रीय पंडितों ने बताया कि उच्च जातीय मध्यम परिवारों की विधवायें पढ़–लिखकर अध्यापिका आदि बन जातीं हैं। और विधवाओं के प्रति कठोर परम्पराओं में परिवर्तन हो रहा हैं।

तालिका–1

आयु के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0	आयु वर्ष में	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	16–25	0	0
02	26–35	0	0
03	36–45	28	12.4
04	46–55	27	12.0
05	56 वर्ष से उपर	170	75.6
योग		225	100.0

तालिका–2

जाति के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0	जाति	संख्या	प्रतिशत
01	सामान्य जाति	106	47.1
02	पिछड़ी जाति	48	21.3
03	अनुसूचित जाति	42	18.6
04	अनुसूचित जनजाति	0	0
05	मुस्लिम,इसाई,जैन	29	13
06	अन्य	0	0
योग		225	100.0

तालिका–3

शैक्षिक स्थिति के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0	शिक्षा	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	निरक्षर	143	63.5
02	प्राथमिक	51	22.7
03	माध्यमिक	17	7.5
04	उच्च शिक्षा	14	6.2
योग		225	100.0

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

तालिका–4
काशीवास के अवधि के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0	काशीवास की अवधि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	एक माह से कम	28	12.4
02	एक माह से एक वर्ष	19	8.4
03	एक वर्ष से पॉच वर्ष	28	12.4
04	पॉच वर्ष से दस वर्ष	19	8.4
05	दस वर्ष से अधिक	131	58.4
	योग	225	100.0

तालिका–5
जीविका के स्रोतो के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0	जीविका के स्रोत	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	छोटे–मोटे काम पर आश्रित	58	25.7
02	भीख मांग कर	6	2.6
03	दान–धर्म पर आश्रित	110	49.0
04	अन्य स्रोतों पर आश्रित	49	21.8
	योग	225	100.0

तालिका–6
परिवार की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि

क्र0सं0	परिवार की श्रेणी	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	उच्च	4	1.8
02	मध्य	74	32.9
03	निम्न	140	62.2
04	परिवार विहीन	7	3.1
	योग	225	100.0

तालिका–7
विधवाओं को परिवार से मिलने वाला आर्थिक सहयोग

क्र0सं0	सहयोग	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	हमेशा	11	4.9
02	कभी–कभी	37	16.4
03	कभी नही	177	78.7
	योग	225	100.0

तालिका–8
मृत पति द्वारा छोड़ी गयी सम्पत्ति के सापेक्ष विधवाओं की वैचारिकी

क्र0सं0		उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	53	23.5
02	नहीं	172	76.5
	योग	225	100.0

तालिका–9
विधवा आश्रम में आने का कारण

क्र0सं0	कारण	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	परिवार के सदस्यों के	32	14.2
02	समाज व पडोसियो के दबाव में	3	1.3
03	स्वयं	131	58.3
04	अन्य	59	26.2
	योग	225	100.0

तालिका–10
विधवा पेंशन प्राप्ति के सापेक्ष विधवा महिलाओं की स्थिति

क्र0सं0		उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	37	16.4
02	नहीं	188	83.6
	योग	225	100.0

तालिका–11
प्रस्थिति में सुधार हेतु वैचारिकी

क्र0सं0		उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	महिला शिक्षा	63	28.0
02	महिला रोजगार	33	14.7
03	सम्पत्ति उत्तराधिकार के कानून	15	6.7
04	समाज सुधार	60	26.7
05	महिलाओं में जागरूकता	54	24.0
06	अन्य	0	0
	योग	225	100.0

तालिका–12
विधवा पुनर्विवाह के सम्बन्ध में विधवाओं की राय

क्र0सं0	विधवाओं की राय	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	169	75.1
02	नहीं	56	24.9
	योग	225	100.0

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Christie Fernando, (2002), Plight of widows the wid est coverage in Sri Lanka -Daily news- Magazine, lake House, The Associate news papers of ceylan, Sri Lanka.
2. Malladi Subbamma, (1985) women tradition and cul ture, sterling publishers, new Delhi.
3. Margaret owen,(2001), empowering widows in De velopment- Non governmental organization- report, landon.
4. Martha alter chen,(2002), common status of women- report, New Delhi.
5. Mohini Giri (2002), The struggle for an identity- The widows of virndavan, abouse for concern, the hindu online the hindu@vsnl.com Chennai.
6. NHRC, (2001), Helping widows in india- Women's convention discrimination against women, NHRC report, new delhi.
7. NHRC, (2002), the situation and problems of wid ows in india, Past and present- national human rights commissions, new Delhi.
8. Pathak Bindeshwar and Tripathi satyendra, (2016), widows in india
9. Mittal satyaprakash and maurya ramlakhan, kasha me mokshkami pravasi vidhvayen.

*****